एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

# बारिश के मौसम में पशुओं की देखभाल एवं रोगों से रोकथाम

(*मनीष कुमार दुरिया[1] एवं जगपाल जोगी[2])
[1]पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, श्रीनाथजी कृषि महाविद्यालय, नाथद्वारा
[2]राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा
*संवादी लेखक का ईमेल पता: manishduria@gmail.com

बारिश का मौसम पशुपालकों के लिए बेहद चुनौती पूर्ण तथा साथ ही पशुओं में बीमारियों के लिए सबसे घातक समय होता है। ऐसे मौसम मे दुधारू पशुओं के स्वास्थ्य, चारा, दूध दोहन का प्रबंधन का विशेष ध्यान रखना चाहिए। बारिश के मौसम में पशुओं को कई प्रकार की बीमारियां होती है। बारिश के मौसम में पशुओं की रोगो से लड़ने की क्षमता कम हो जाती हैं तथा इस मौसम में अधिक आद्रता होने के कारण जीवाणु एवं परजीवियों के लिए अनुकूल होती है जिस कारण से जीवाणु एवं परजीवी कीड़े (अन्त: परजीवी तथा बाह्य परजीवी ) पैदा हो जाते हैं, जो रोग का कारण बनते हैं। इस मौसम में पशुशाला का फर्श हर समय गीला तथा साफ़ नहीं रहता है तो फर्श पर जीवाणु पनपने लग जाते हैं तथा पशु थनैला रोग तथा अन्य रोगों से ग्रसित हो जाते हैं। साथ ही गीले फर्श के कारण खुरों में होने वाले रोग भी बढ़ जाते हैं। इसलिए बारिश के मौसम में अन्त: परजीवी कीड़ो से बचाव के लिए पशुओं में डिवार्मिंग (कृमिनाशक दवा देना) अति आवश्यक होता है। बाह्य परजीवीय कीड़ो का नियंत्रण भी अत्यधिक आवश्यक होता है क्योंकि ये कीड़े पशुओं का खून चूसते हैं साथ ही कई प्रकार की बीमारियों को भी फैलाते है। इसलिए बारिश के मौसम में पशुओं की देखभाल पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती हैं।

इस मौसम में पशुओं में होने वाले प्रमुख संक्रामक रोग जैसे खुरपका मुँहपका, गलघोटू, न्यूमोनिया, लंगड़ा बुखार आदि हैं। परजीवी रोगों में थैलेरिओसिस, बबेसिओसिस आदि प्रमुख रोग हैं। कई बार बारिश के मौसम में संक्रामक रोगों से पशुओं की जान भी चली जाती है। पशुपालकों को यह ध्यान देना चाहिए की उनका कोई पशु किसी बीमारी से ग्रसित तो नहीं है साथ ही रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखना चाहिये।

**बारिश के मौसम में पशुओं की देखभाल में सावधानियां-**

- वर्षा ऋतू के पहले पशुओं के पशुशाला (शेड) की छत की मरम्मत अवश्य कर देनी चाहिये जिससे बारिश का पानी का रिसाव बिल्कुल नहीं हों। यह शेड मजबूत होना चाहिए ताकि आंधी-बारिश में गिर नहीं सके।
- बारिश के मौसम में पशुशाला की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें एवं पानी को एक जगह पर एकत्रित नहीं होने दें जिससे मच्छर पैदा ना हों और परजीवी संक्रमण रोका जा सके।
- पशुओं के मलमूत्र के निकासी का भी उचित प्रबंध होना चाहिए।
- पशुशाला में समय-समय पर बारिश के मौसम में कृमिनाशक दवा का छिड़काव करना चाहिए।
- बारिश के मौसम में पशुशाला और उसके आसपास गंदगी और कचरा इक्कठा नहीं होने देना चाहिए और उसके निकास की उचित प्रबन्ध होना चाहिए।

- ❖ पशुओं को बारिश के मौसम में बाहर चरने के लिए नहीं भेजें क्योंकि इस मौसम में गीली घास पर कई तरह के कीड़े तथा उनके लार्वा होते हैं जो पशुओं के पेट में चले जाते हैं और शरीर को हानि पहुँचाते हैं।
- ❖ बारिश के मौसम में नदियो, तालाब का पानी विभिन्न प्रकार के परजीवियों तथा कीटाणुओ से प्रदूषित हो जाता है, इसलिए पशुओं को साफ एवं ताजा पानी पिलाना चाहिए।
- ❖ पशुओं को हरे चारे के साथ साथ सूखा चारा भी उचित मात्रा में देना चाहिए।
- ❖ बारिश के मौसम में अपने पशुओं टीकाकरण जरुर करवाना चाहिये।

**बारिश के मौसम में होने वाली प्रमुख रोग-**

**1. खुर पका एवं मुख पका रोग-** खुर एवं मुख संबंधी रोग बारिश के मौसम में पशुओं में आम पायी जाती है। यह रोग गाय, भैंस, बकरी, भेंड़ आदि पालतू पशुओं में होती है। यह संक्रामक रोग होता है इसलिए इस रोग को रोकने के लिए रोगग्रसित पशुओं को दूसरे पशुओं के संपर्क में नहीं आने देना चाहिए।

**रोग के लक्षण-** पैर और मुंह के रोग में पशुओं की नाक, जीभ और होठों पर, मुंह में छाले हो जाते हैं जिससे उन्हें खाने में परेशानी होती है. इसके अलावा उनके पैर में दोनों खूरो के बीच घाव हो जाता है जिससे उन्हें चलने में परेशानी होती है और लंगड़ाकर चलते हैं। पशुओं में इस रोग के कारण मुंह से झागदार लार टपकती है। इस दौरान उन्हें तेज बुखार आ जाता है, जिसकी वजह से पशु खाना बंद कर देते हैं और उनका दूध भी कम कर हो जाता हैं।

**रोग का इलाज-** रोग से ग्रसित पशुओं के प्रभावित अंगों को जैसे उनके पैर एवं मुख को 1 प्रतिशत पोटैशियम परमैगनेंट के घोल से धोना चाहिए। उनके मुख में बोरिक एसिड, ग्लिसरीन का पेस्ट लगाना चाहिए! इसके साथ ही जानवरों को 6 महीने के अंतराल से एफ. एम. डी. के टीके लगवाने चाहिए।

**2. ब्लैक क्वार्टर (लंगड़ा बुखार )-** ब्लैक क्वार्टर पशुओं को होने वाला घातक रोग है। यह पशुओं में होने वाला एक बहुत ही तेज गति से फेलने वाला संक्रामक रोग हैं यह रोग जीवाणु से होता है। गाय, भैंस, भेड़ और बकरी भी इस रोग से प्रभावित होते हैं। आम तौर पर यह रोग बारिश के मौसम मे होता हैं।

**रोग के लक्षण-** ब्लैक क्वार्टर रोग से पीड़त पशुओं में भूख की कमी हो जाती है। खाना नहीं खाने के कारण जल्द ही कमजोर हो जाते हैं। पशुओं को तीव्र बुखार भी होता है। साथ ही उनकी हृदय की गति और नाड़ी तेज हो जाती है तथा उन्हें सांस लेने में परेशानी होती है।

**रोग का इलाज –** पशुओं को यह रोग होने पर प्रारंभिक अवस्था में ही इसे नियंत्रित किया जा सकता है। रोग के इलाज हेतु पशुपालन केंद्र पर संपर्क करना चाहिये तथा बारिश के मौसम से पहले वार्षिक टीकाकरण अवश्य करवाना चाहिये।

3. **थनैला रोग-** बारिश के मौसम में पशु थनैला रोग रोग की चपेट में आ जाते हैं। इस मौसम में थनैला रोग फैलने के प्रमुख कारण पशु शाला की साफ सफाई का अच्छी तरह से न होना होता है। बारिश के मौसम आद्रता के कारण अधिक जीवाणु की संख्या होने के कारण इस रोग का प्रकोप अधिक हो जाता है। रोग के जीवाणु पशु के गंदे एवं गीले फर्श पर बैठ जाने के कारण थनों के माध्यम से प्रवेश कर जाते हैं। यह रोग संक्रमित पशु के संपर्क में आने, दूध निकालने वाले के गंदे हाथों, पशुओं के गंदे आवास, गंदा तथा खुरदरा फर्श और थन में संक्रमण होने व चोट लगने से भी यह रोग होता है।

**रोग के लक्षण-** दुधारू पशुओं के थन में कड़ापन, सूजन, और दर्द थनैला रोग के लक्षण होते हैं। थनैला रोग में थन गर्म, सूजे हुए, सख्त और दर्ददायी हो जाते हैं। थनों से थक्के युक्त या दही की तरह जमा हुआ दूध निकलता हैं। इस रोग में कभी कभी दूध के साथ रक्त भी निकलता है। दूध गंदा और पीले-भूरे रंग का हो जाता हैं। दूध से दुर्गंध आने लगती है। थनों में गांठे पड़ जाती हैं। इस रोग में पशु को बुखार आता है और वह खाना पीना कम कर देता है। दूध की मात्रा भी कम हो जाती है।

**रोग का इलाज-** पशुओं के आवास को साफ एवं स्वच्छ रखें। फिनाइल से सफाई करें। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि एक पशु का दूध निकालने के बाद हाथों को अच्छी तरह साफ करके ही दूसरे पशु का दूध निकालना चाहिये और दूध साफ बर्तन में ही निकालें। पशु का दूध भी सही विधि से निकाला जाना चाहिये। थन में किसी भी तरह का घाव होने पर तुरंत उपचार करवाएं।

**पशुओं में टीकाकरण -** बारिश के मौसम में वातावरण में आद्रता बढ़ जाती है। जिससे पशुशाला में गर्मी, पशुओं के मलमूत्र की गंदगी के कारण हवा में जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि से पशुओं में विभिन्न प्रकार के संक्रामक रोगों संभावना बढ जाती है। जिस कारण से पशुओं की आंतरिक रोगों से लड़ने की क्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है फलस्वरूप पशु कई रोगों से ग्रसित हो जाता हैं। पशुओं में टीकाकरण के द्वारा विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाव संभव है। पशुपालकों को पशुओं का उचित टीकाकरण पशु चिकित्सक की सलाह पर प्रारंभ में ही तथा प्रति वर्ष पुन: टीकाकरण करवाना चाहिए।

टीकाकरण की विस्तृत जानकारी निम्नानुसार है।

| रोग | पशु | टीका का का नाम | प्रथम टिका लगाने की उम्र | खुराक | अंतराल |
|---|---|---|---|---|---|
| खुरपका - मुँहपका | गाय, भेंस, भेड़, बकरी | एफ. एम. डी. | 4 माह | 2 मि. ली. | अर्द्धवार्षिक |
| लंगड़ी बुखार | गाय, भेंस, भेड़, बकरी | पोलिवेलेंट बी. क्यू. टीका | हर उम्र में | 2 मि. ली. | वार्षिक |
| गलघोंटू | गाय, भेंस, भेड़, बकरी | आयल एडजूवेंट टीका | हर उम्र में | 3 मि. ली. | वार्षिक |
| एंथ्रेक्स | गाय, भेंस, भेड़, बकरी | एंथ्रेक्स स्पोर टीका | हर उम्र में | 1 मि. ली. | वार्षिक |
| *ब्रुसेलोसिस* | गाय, भेंस | कॉटन स्ट्रेन-19 टीका | 6 माह | 5 मि. ली. | 4-5 वर्ष |
| *रिंडरपेस्ट* | गाय, भेंस, भेड़, बकरी | टिशू कल्चर *रिंडरपेस्ट वैक्सीन (टी. सी. आर. वी.)* | 6 माह के ऊपर के पशुओं को | 1 मि. ली. | पुरे जीवनकाल में एक बार |